P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-III, February-2015
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

भ्रष्टाचार का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

शैफाली सुमन
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र,
महाराणा प्रताप राजकीय महाविद्यालय,
सिकन्दराराऊ (महामायानगर),

सारांश

भ्रष्टाचार एक सार्वभौमिक प्रक्रिया बन चुका है। सम्पूर्ण विश्व में इसका विस्तार हो चुका है। हमारे सावर्जनिक जीवन में यह किसी न किसी रूप में विद्यमान है। यह कोई नवीन अवधारणा अथवा तथ्य नहीं है। यह प्राचीनकाल से चला आ रहा है। चाणक्य ने अपनी पुस्तक ''अर्थशास्त्र'' विभिन्न प्रकार के भ्रष्टाचार का उल्लेख किया है। सन् 2010 में 'ट्रांसपरेंसी इण्टरनेशल संस्था' द्वारा 178 देशों में किए गए सर्वेक्षण में यह तथ्य उभर कर आया कि विश्व के अधिकांश देशों में भारत 3.3 अंक के साथ 87वां स्थान पर है। डेनमार्क, न्यूजीलैण्ड तथा सिंगापुर सबसे कम भ्रष्ट देशों में तथा सोमालिया, वर्मा, अफगानिस्तान एवं ईराक, पाकिस्तान, सबसे भ्रष्ट देशों में थे। भारत का 2009 में 84वां 2008 में 85वां स्थान था। इसी क्रम में बजाय कम होने के भ्रष्टाचार 2011 में भारत 95वें स्थान आ गया अर्थात भ्रष्टाचार में लगतार वृद्धि हो रही है। भारतीय समाज से आदर्श, संस्कार समर्पण, लोकाचार, लोक कल्याण, ईमानदारी आदि के स्तर में भयंकर गिरावट देखी जा रही है। सर्वत्र भौतिकवाद, उपभोक्तावाद तथा दिखावा मौजूद है। बाजारवाद ने सामाजिक जीवन में ईर्ष्या व प्रतिस्पर्द्धात्मक संघर्ष को बढ़ावा दिया है। इस प्रकार की सामाजिक संरचना में व्यक्ति उचित अनुचित को तिलांजलि दे पैसे के संचयन पर जोर देता है।

मुख्य शब्दः भ्रष्टाचार, व्यवस्था, मूल्य, तंत्र, उपभोक्ता

प्रस्तावना

. सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार सहज रूप लेता जा रहा है। आज यह एक सामान्य सी बात हो गई है। भारतीय जनमानस में कहीं यह तथ्य गहरे से बैठ चुका है बिना पैसा/उपहार दिए बिना आपका कोई कार्य नहीं होगा। इस स्थिति का सामना प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में कभी न कभी अथवा अनेकों बार करना ही पड़ता है। सार्वजनिक क्षेत्र के विभिन्न विभागों यथा, राजनीति, नौकरशाही अस्पताल, सेना, व्यवसाय शिक्षा आदि में भ्रष्टाचार व्यापक है। भ्रष्टाचार सामाजिक जीवन में विघटन का भी परिचायक है। यह एक गम्भीर सामाजिक समस्या है। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी ने कहा था कि–विकास के लिए जो धन केन्द्र से राज्यों को भेजा जाता है उसका एक रूपये में केवल 15 पैसे ही आम जनता तक पहुँच पाता हैं। शेष बिचौलिए उड़ा ले जाते हैं। ईमानदारी व सत्यनिष्ठा अब ना के बराबर रह गई है। रूपयों से यहाँ सब कुछ खरीद लिया जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भ्रष्टाचार का वर्तमान स्वरूप ज्ञात करना।
2. प्रचलित धारणाओं व मान्यताओं का विश्लेषण।
3. भ्रष्टाचार की व्यापकता ज्ञात करना।
4. निदान हेतु उपायों को प्रस्तुत करना।

परिकल्पनायें

1. भ्रष्टाचार सहज होता जा रहा है व्यक्ति कार्य कराने के लिए इसे 'शोर्टकट' के रूप में प्रयोग करता है।
2. भ्रष्टाचार के कारण हमारे सामाजिक जीवन में ही निहित है।
3. भ्रष्टाचार के निराकरण हेतु बनाये गए कानून व कारगर सिद्ध नहीं हुए है।
4. पूंजीवाद, उपभोक्तावाद, भौतिकवाद के चलते यह फलफूल रहा है।

अध्ययन पद्धति तथा आंकड़ों का संग्रह

प्रस्तुत शोधपत्र में भ्रष्टाचार की व्यापकता, कारण, निदान व जनमानस की मान्यताओं को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। इस अनुसंधान कार्य में तथ्यों के स्रोतों में शोध पत्रिकाओं, समाचार पत्रों व विभिन्न रिपोर्टों द्वारा

की समस्या को विस्तार से विवेचित करने का प्रयास किया गया है।

सार्वजनिक जीवन में हम अनेक बार भ्रष्टाचार शब्द का प्रयोग करते हैं व इसकी स्थिति का सामना भी करते हैं। भ्रष्टाचार व्यक्ति का एक विशेष प्रकार का परिस्थितिजन्य आचरण है जो भ्रष्ट माना जाता है। शाब्दिक दृष्टि से भ्रष्टाचार उस आचरण को कहते हैं जो सामाजिक रूप से उसके अपेक्षित व्यवहार प्रतिमानों से भिन्न हों। इसका आशय नैतिकता का खत्म होना व ईमानदारी जैसे आदर्शों का लोप होना है।

इलियट एवं मैरिल के अनुसार के अनुसार ''प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष लाभ हेतु जानबूझकर निश्चित कर्तव्य का पालन न करना ही भ्रष्टाचार हैं।

सदरलैण्ड के अनुसार ''आर्थिक क्षेत्र में अत्यधिक सामान्य तथा व्यापक स्वरूपों में कारपोरेशन के आर्थिक वक्तव्यों में धोखेबाजी, स्टॉक एक्सचेंज में बेईमानी, व्यापार के कार्यों में घूस, अनुकूल ठेके एवं विधा प्राप्त करने के लिए सरकारी अधिकारियों को घूस, असत्य विज्ञापन तथा प्रचार, तौल नाप आदि में धोखेबाजी, स्वंय को दिवालिया घोषित कर पूंजी का लाभ उठाना आदि अनुचित प्रयोग भ्रष्टाचार में सम्मिलित है।

वर्ल्ड बैंक इंस्टीट्यूट के भ्रष्टाचार को छह प्रकारों में वर्गीकृत किया है। प्रशासनिक भ्रष्टाचार, राजनीतिक भ्रष्टाचार, लोक भ्रष्टाचार, निजी भ्रष्टाचार वृहद भ्रष्टाचार लघु भ्रष्टाचार।

भ्रष्टाचार एक सार्वभौमिक अवधारणा है। सामान्य रूप से समाज द्वारा स्वीकृति प्राप्त लोकाचार, मानदण्डों के विरूद्ध अथवा प्रतिबन्धित कार्यों के प्रति लोगों का झुकाव अधिक होता है। भ्रष्टाचार की प्रक्रिया में 'अनुकूल प्रतिक्रिया' होती है जो इसे विकसित करने में मदद करती है। यह सक्रिय अवस्था में होती है, इसमें किसी व्यक्ति का काम करने के लिए गए उपहार अथवा धन को व्यक्ति सहज रूप में लेता है। अपना कार्य कराने वाला व्यक्ति भी समय से अपना कार्य करना तथा विलम्ब के झंझट से मुक्ति पाने के लिए आसान रास्ता खोजता है। इसी कारण भ्रष्टाचार आज एक जनरीति सा बनता जा रहा है। भ्रष्टाचार के कीटाणु वातावरण में चारों ओर फैले हैं, इसी वातावरण में हम सांस लेते हैं। भ्रष्टाचार की प्रक्रिया में अनुकूल परिस्थितियाँ जल्द प्रभाव दिखाती हैं जबकि विपरीत या भ्रष्टाचार को रोकने वाली शक्तियाँ इसे ज्यादा प्रभावित नहीं कर पाती हैं। मंहगाई व उपभोक्ता बाजार के साथ–साथ मनुष्य की महत्वकाक्षाऐं भी बढ़ती जाती हैं। अपने से उच्च वर्ग के व्यक्ति के विलासितापूर्ण जीवन को देखकर व्यक्ति के ऊपर एक दबाब सा बन जाता है वह ऐश्वर्य के मायाजाल में फंस जाता है यहीं से प्रारम्भ होती है व्यक्ति की भोगवादी सुखवादी महत्वकाक्षाओं की दौड़ जिसमें पड़ कर व्यक्ति अपने आपको व सर्वजन सुखायः के नैतिक मूल्यों को भूल जाता है। नरक पाने का भय भी इस विज्ञान के युग में महत्व खोता जा रहा है। भारत में नौकरीशाही, राजनीति, न्यायपालिका (निचली अदालतें) धर्मतंत्र, मीडिया एवं स्वयंसेवी संगठन अपवित्र गठबंधन बन चुके हैं। धर्मतंत्र का आज व्यवसायीकरण हो चुका है। धर्मगुरूओं द्वारा धार्मिक सम्मेलन करना, आश्रम बनाना, समर्थकी की संख्या बढ़ाना, किसी न किसी प्रकार धन सम्पत्ति एकत्रित करने व संसद तक पहुँचने के साधन बन चुके हैं।

भ्रष्टाचार की व्यापकता

सरकार के प्राय सभी विभागों में भ्रष्टाचार व्याप्त है। सन्थानम कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार भ्रष्टाचार की शिकायतें वाले विभागों की तालिका इस प्रकार है–

(1) उद्योग वणिज्य विभाग (2) सामुदायिक विकास और सहकारिता विभाग (3) सुरक्षा सेना विभा (4) शिक्षा विभाग (5) परराष्ट्र विभाग (6) अर्थ आबकारी, तटकर सुरक्षा, आर्थिक विकास विकास, व्यय, आयकर तथा राजस्व विभाग (7) खाद्य और कृषि विभाग (8) स्वास्थ्य विभाग (9) गृह विभाग (14) सूचना एवं प्रसारण विभाग (11) सिंचाई एवं विद्युत विभाग (12) श्रम व रोजगार विभाग (13) न्याय विभाग (14) खान विभाग (15) रेलवे विभाग (16) वैज्ञानिक शोध और संस्कृति विभाग (17) इस्पात व भारी उद्योग विभाग (18) यातायात व संचार विभाग (19) डाकतार विभाग (20) पुनर्वास विभाग (21) तामीरात विभाग (22) राष्ट्रपति का सचिवालय (23) प्रधानमंत्री का सचिवालय (24) योजना आयोग (25) संघीय सार्वजनिक सेवा आयोग।

शोध की उपलब्धियाँ/सार एवं निष्कर्ष

भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण समाज में मूल्यों एव आदर्शों का तेजी से लोप होना है। समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठा व कल्याणकारी भावनाओं में कमी आती जा रही है। व्यक्ति आज अनुचित का भी औचित्य सिद्ध करने का प्रयास करता हैं समाज में आज सर्वत्र उपभोक्तावाद भौतिकवाद, पूंजीवाद का बोलवाला हैं समाज में सामाजिक तनाव, प्रतिस्पर्द्धा व संघर्ष पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। बाजारवाद ने व्यक्ति में भोगवादी प्रवृति को बढ़ावा दिया है। जिसमें व्यक्ति अपने फायदे के लिए अवसर आने पर कर्तव्य मूल्यों को भूलकर पैसों को महत्व देता है। सीमित आय, बढ़ती मंहगाई, सामाजिक प्रतिष्ठा को ऊँचा उठाने की दौड़, दहेज प्रथा आदि के कारण आज मिलावटखोरी, रिश्वतखोरी बढ़ रही है। सामाजिक कुरीतियां, जातिप्रथा, सामाजिक असमानता, विलासितापूर्ण जीवन की लालसा आदि भ्रष्टाचार की समस्या के पनपने के कारण हैं।

भ्रष्टाचार की प्रक्रिया आज सहज रूप धारण करती जा रही है जो कि समाज के हित में नहीं है। ये आम आदमी के लिये कष्टदायक है। निर्धन वर्ग को यह भ्रष्टाचार अनेक तकलीफों से रूबरू कराता है। इसके विरूद्ध कानून उतने कारगर साबित नहीं हुये हैं।

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु साक्षात्कार दाताओं ने यह तथ्य स्वीकार किया कि भारत में नौकरशाही, राजनीति, न्यायपालिका (निचली अदालतें) धर्मतंत्र, मीडिया, बैंकिग प्रणाली, चिकित्सा, शिक्षा व अन्य क्षेत्रों में सर्वाधिक भ्रष्टाचार व्याप्त है। शोधकार्य हेतु किए गए सर्वेक्षण जो कि शिक्षित व गैर शिक्षित व्यक्तियों के साक्षात्कार पर

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-III, February-2015
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

आधारित है, यह तथ्य उभर कर सामने आया कि कृषि में सबसे कम भ्रष्टाचार है। 99 प्रतिशत व्यक्तियों की राय के अनुसार राजनीति में सर्वाधिक भ्रष्टाचार व्याप्त हैं। इसके चलते सांसद व विधायक अमर्यादित आचरण का प्रयोग करते हैं। सरकारी योजनायें कागजी कार्यवाही तक सीमित होती है केवल दस प्रतिश तक ही इनका लाभ पहुँचता है। बाल विकास हेतु चलायी जा रही योजनाओं का वास्तविक लाभ बहुत कम को मिल पाता है। 60 फीसदी की राय में नौकरशाही में 80 प्रतिशत इसी प्रकार चिकित्सा क्षेत्र में 50 प्रतिशत, स्वंयसेवी संस्थानों में 25 प्रतिशत मीडिया में 40 प्रतिशत, पुलिस व्यवस्था में सर्वाधिक 90 प्रतिशत भ्रष्टाचार व्याप्त है। न्यायिक व्यवस्था में 70 प्रतिशत तक भ्रष्टाचार मौजूद है जहाँ रसूख वाले अपराधियों को पैसे लेकर छोड़ दिया जाता है कानून को तोड़ मरोड़कर प्रस्तुत किया जाता है। निर्धन व्यक्ति को न्याय नहीं मिलता, उनके मुकदमे लम्बित पड़े रहते हैं। इसी प्रकार लोगों की राय में मीडिया में भी भ्रष्टाचार फैला हुआ है वह अपने फायदे के लिए खबरों को चटाकेदार व मसालेदार रूप में बनाकर पेश करता है कभी कुछ गैर जरूरी मुद्दों को ज्यादा उछालता है। इसी प्रकार 80 प्रतिशत लोगों का मानना था कि शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार व्याप्त है नकल माफिया परीक्षाओं के समय सक्रिय हो जाता है। वह युवाओं को पथभ्रष्ट व भ्रम में डालता है उनके पास डिग्रियाँ व प्रमाण पत्र तो होते हैं किन्तु ज्ञान व अनुभव नहीं होता आगे चलकर यही युवा नौकरी न मिलने पर आन्दोलन करते हैं नियुक्तियों में रिश्वतखोरी का आगाज करते हैं। इससे समाज में विघटन व संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है।

50 प्रतिशत का मानना था कि चिकित्सा क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं के लिए जो सरकारी स्वास्थ्य योजनाऐं चलायी जाती है वह सौ प्रतिशत सफल नहीं होती है कार्यकर्ता गावों में कुछ चुनिन्दा महिलाओं को ही इसका लाभ देती हैं। इसी प्रकार धर्मतंत्र, स्वयंसेवी संस्थानों आदि में भ्रष्टाचार फल फूल रहा है।

तालिका–I

सार्वजनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में भ्रष्टाचार

क्षेत्र का नाम	भ्रष्टाचार का प्रतिशत
राजनीति	95%
पुलिस व्यवस्था	90%
सरकारी योजनाऐं	90%
नौकरशाही	80%
न्यायिक व्यवस्था	70%
शिक्षा व्यवस्था	60%
चिकित्सा	50%
धर्मतंत्र	40%
स्वयंसेवी संस्थान	25%
कृषि क्षेत्र	5%
रोडवेज/परिवहन	20%

तालिका–2

भारत के विभिन्न राज्यों में भ्रष्टाचार निरोध की दर

राज्य	1990–95	1996–00	2001–05	2006–10
बिहार	0.41	0.30	0.43	0.88
गुजरात	0.48	0.57	0.64	0.69
आन्ध्र प्रदेश	0.53	0.73	0.55	0.61
पंजाब	0.32	0.46	0.46	0.60
जम्मू कश्मीर	0.13	0.32	0.17	0.40
हरयाना	0.33	0.60	0.31	0.37
हिमाचल प्रदेश	0.26	0.14	0.23	0.35
तमिलनाडू	0.19	0.20	0.24	0.29
मध्य प्रदेश	0.23	0.22	0.31	0.29
कर्नाटक	0.24	0.19	0.20	0.29
राजस्थान	0.27	0.23	0.26	0.27
केरल	0.16	0.20	0.22	0.27
महाराष्ट्र	0.45	0.29	0.27	0.26
उत्तर प्रदेश	0.11	0.11	0.16	0.21
उड़ीसा	0.22	0.16	0.15	0.19
आसाम	0.21	0.02	0.14	0.17
पश्चिम बंगाल	0.11	0.08	0.03	0.01

भ्रष्टाचार रोकने के लिए समाजशास्त्री गुन्नार मिर्डल ने कुछ सुझाव दिये हैं जो निम्नवत हैं:–

1. कम वेतन पानेवालों के वेतन, सामाजिक स्तर व प्रतिष्ठा में वृद्धि की जाये।
2. मंत्री व उच्चाधिकारियों में ईमानदारी पनपे।
3. व्यापारियों द्वारा दिये जाने वाले राजनीतिक चन्दों पर रोक लगायी जाये।
4. जो लोग शिकायत करते हैं, उन्हें सुरक्षा प्रदान की जाये।
5. भ्रष्टाचार के विरूद्ध विरोधी भावनाओं का प्रचार प्रसार किया जाये।

निष्कर्ष

भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त करना है तो सबसे पहले हमें स्वयं से यह पहल करनी होगी। उचित, अनुचित, स्वर्ग, नरक, पवित्र, अपवित्र, परोपकारी कार्यों के मूल्यों को बढ़ावा देना होगा।

भ्रष्टाचार शोषण को भी जन्म देता है इसके विरूद्ध विभिन्न तरीकों से आवाज उठायी जानी चाहिए। डर से कभी डरे नहीं। भ्रष्टाचार का विरोध करने पर बहुत कम पीड़ा होगी जबकि भ्रष्टाचार को सहने पर अत्यधिक मानसिक कष्ट पहुँचता है। भ्रष्ट लोगों को क्षमा नहीं करना चाहिए क्योंकि क्षमा करने पर यह व्यक्ति की लाचारी का फायदा उठाते हैं।

शिक्षा तंत्र में नैतिक मूल्यों, आध्यात्म, ध्यान, योग को जोड़ना होगा। नौकरशाही में भ्रष्टाचार को कम करने के लिए नौकरशाही को सरल बनाया जाये। जनता को जागरूक किया जाये, प्रभावशाली दण्डनीति भी अमल में लायी जाये।

संदर्भ ग्रन्थ

1. निरोश राजेन्द्रः विनम्र भ्रष्टाचार इंडिया न्यूज 17

नवम्बर से 23 नवम्बर 2007
2. कुमार रवीशः भ्रष्टाचार जहाँ व्यवहार है द संडे इंडियन 09 दिसम्बर 2007
3. भण्ट्टाचार्य समंत और कुमार पंकजः गणतंत्र पर भ्रष्टतंत्र का कब्जा आउटलुक दिसम्बर 2010
4. सिंह जोगिन्दरः ऊँचे लोग ऊँची बेईमानी आहा जिंदगी दिसम्बर 2005
5. झुनझुनवाला भरतः भ्रष्टाचार पर अंकुश दैनिक जागरण 2010
6. भ्रष्टाचारः बढ़ रहा है अजगर का आकार दैनिक जागरण, अलीगढ़ 28 नवम्बर 2010
7. योगेन्द्र सिंहः ''भ्रष्टाचार का समाजशास्त्र'' राष्ट्रीय सहारा (हस्तक्षेप), 31 मार्च 2001, पृष्ठ 3
8. डॉ0 रघुवंश 'भ्रष्टाचार का तर्क, भारत टाइम्स, 30–8–78
9. मिर्डल गुन्नारः एशियन ड्रामा खण्ड 2 पृ0 955–956
10. A Latas, Sayed Hussein 1968/1980: The Sociology of Corruption:
11. The nature, function, causes and prevention, Singapure:Do and Mooh Press Ltd.
12. Gill,S.S.1998, The Pathology of corruption.New Delhi:
13. Elliott and Merrill, Social Disorganization, P, 536
14. Robert C Brooks, Corruption in American Politics and life P.91
15. E.H. Sutherland: white collar crime P 199-200.